हम दुसरों की सेवा करते हैं, क्योंकि उन्हे प्रेम करते हैं।

भेड़ और बकरी के बीच अंतर ज्ञात करें।

प्रार्थना: हमारे आसमानी बाप, इस अध्ययन के द्वारा बच्चों को प्रोत्साहित करो कि वे प्रेम से दुसरो की सेवा करें

बच्चो को सिखाने के लिए कोई भी कार्यक्रम चुनिए।

कोई बड़ा बच्चा या अध्यापक मत्ति 25:31-46 से भेड़ों और बकरियों की कहानी पढ़े। यह हमें बताती है कि कैसे परमेश्वर फैसला करता है कि कौन उसके जन है और कौन नहीं कहानी सुनाने के बाद ये प्रश्न पूछिए:-

- कौन लोगो का निर्णय करेगा और उनको भेड़ और बकरियों की तरह अलग करेगा (उत्तर पढ़ 31-32)
- भेड़े परमेश्वर में अपना प्रेम प्रदर्शित कैसे करेगी (35)
- बकरियाँ जरूरतमन्द लोगो से कैसा व्यवहार करेगी (42)
- जब हम जरूरत के समय किसी की सेवा करते है तो हम किसकी सेवा करते है (40)
- जो दुसरो से प्रेम नहीं करते, न्याय के दिन उनके साथ क्या होगा (46)

मत्ति 25:31-46 से भेड़ और बकरियो की कहानी का कुछ भाग नाटक द्वारा प्रस्तुत करें।

बड़े बच्चे और वर्णनकर्ता यीशु और वर्णनकर्ता का नाटक प्रस्तुत करें। वर्णनकर्ता कहानी का सारांश, बच्चो को याद करने के लिए कि क्या कहना है, करें।

जवान बच्चे भेड़ो बकरियो और मनुष्यो का पात्र करें जिनको सहायता की जरूरत है।

नाटक, पहला भाग, मत्ति 25:31-40

वर्णनकर्ता: कहानी का पहला भाग बताएं (पढ़ें 31-40) और कहें ''सुनो लोग क्या कहते है''

मनुष्य: मेरी सहायता करो, मैं भूखा हूँ, मुझे भोजन चाहिए मैं प्यासा हूँ, मुझे सोने के लिए जगह चाहिए, मैं बीमार हूँ''।

वर्णनकर्ता: सुनो भेड़े क्या कहती है''

भेड़े: हमारे पास आओ हम तुम्हारी सहायता करेंगे, क्योंकि हम यीशु से प्रेम करती है।

यीशु: मैं अब भेड़ो को बकरियो से अलग करूँगा। भेड़ो, यहाँ मेरे पास आओ, मैं तुम्हें आशिष दुँगा क्योंकि तुमने मुझे खाना खिलाया, कपड़े पहिनाए और मेरी सहायता की।

भेड़े: यह हमने कब किया। हमने आपको कभी जरूरत में नहीं देखा।

यीशु: जो कुछ तुमने इन छोटे से छोटो के साथ किया, वह मेरे साथ किया।

नाटक, भाग दो, मत्ति 25:41-46

वर्णनकर्ता: कहानी का दुसरा भाग (पढ़ 41-46) से बताए और कहें "सुनो मनुष्य क्या कहते हैं"

मनुष्य: मेरी सहायता करो, मैं भूखा हूँ, मुझे कपड़े चाहिए, मैं प्यासा हूँ, मुझे सोने को जगह चाहिए, मैं बीमार हूँ

बकरियाँ: चले जाओ, हम तुम्हारी सहायता नहीं करेगें।

यीशु: बकरियों, मेरे पास से दूर हो जाओ, जब मैं जरूरत में था तुमने मेरी सहायता नहीं की।

बकरियाँः हमने तुम्हें कब जरूरत में देखा?

यीशुः जब तुम जरूरत के समय किसी का तिरस्कार करते हो, तो तुम मेरा तिरस्कार करते हो।

वर्णनकर्ताः उन सबका धन्यवाद करें जिन्होने नाटक में सहायता की।

कलिसिया के अगुवे के साथ मिलकर बच्चो को:-

- प्रार्थना के मध्य नाटक प्रस्तुत की अनुमति।
- बच्चो को बड़ों से प्रश्न करने को कहे जो अध्ययन के शुरू में है।
- कविता प्रस्तुत करें (नीचे देखे) तथा जो कुछ बच्चो ने तैयार किया है।

बच्चो से पूछे कि सहायता के आवश्यक लोगों की सेवा कर हम कैसे परमेश्वर की सेवा कर सकते है। उन्हे उदाहरण देने दे।

खाने के बर्तन का **चित्र बनाएं**, अपनी आराधना के समय बच्चें अपना चित्र बड़ों को दिखाएं। बच्चों को यह बताने दें की एक दूसरे की सेवा करने के द्वारा हम किस पकार परमेश्वर की सेवा करते हैं।

1 यूहन्ना 4:19-20 **याद करें**

कविताः कोई तीन बच्चे। 1 कुरिन्थियो 13:1,4-5 तथा 6-8 पढ़ें।

> यदि मैं मनुष्यो और स्वर्गदूतो की भाषाए बोलू और प्रेम न रखू तो मैं ठनठनाती पीतल और झनझनाती झाँझ हूँ।
>
> प्रेम धैर्यवान है, प्रेम दयालु है वह ईर्ष्या नहीं करता, डींग नहीं मारता, अभद्र व्यवहार नहीं करता, अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुराई का लेखा नहीं रखता।
>
> प्रेम अधर्म से आनन्दित नहीं होता परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। सब बाते सहता है, सब बातो पर विश्वास करता है, सब बातो की आज्ञा रखता है, सब बातों में धैर्य रखता है, प्रेम कभी मिटता नहीं।

बड़े बच्चे कविता लिखे, गीत गाए तथा कहानी लिखें। एक उदाहरण दे कि उन्होने क्या चमत्कार देखा जब लोगो को प्रेम से जरूरतमन्दों की सहायता की। वह यह घर पर कर सकते है या सप्ताह के बीच छोटे समूह में कर सकते है।

प्रार्थनाः प्रभु, हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आपने हमें सच्चे प्रेम को दर्शाया। जैसे आप हमसे प्रेम करते हैं, वैसे ही हमें एक दुसरे से प्रेम करने में सहायता करें। हम जरूरतमन्दो की सहायता करके आपका प्रेम प्रदर्शित करना चाहते है। इस बात को याद करने में हमारी सहायता कर कि जब हम दुसरो की सहायता करते हैं तो उसमें हम आपके लिए अपना प्रेम प्रदर्शित करते हैं।